



भारतीय दर्शन की मूलभूत विशेषताएँ-

कर्म नियम में विश्वास-

चार्वाक को छोड़ कर सभी भारतीय दर्शन कर्म नियम में विश्वास करते हैं। इसके अनुसार अर्द्धे कर्मों का भुक्ता फल तथा बुरे कर्मों का बुरा फल कर्ता को अवश्य मिलता है।

विचारों की स्वतंत्रता-

विभिन्न भारतीय दर्शनों (I.P.) का विकास बिना किसी शबाब के स्वतंत्र रूप से हुआ है। विभिन्न विरोधी विचार धाराओं की उपस्थिति इसकी पुष्टि करती है।

मोक्ष जीवन का चरम लक्ष्य-

चार्वाक दर्शन को छोड़ कर समस्त I.P. मोक्ष को चरम अध्यात्मिक लक्ष्य के रूप में स्वीकार करते हैं।

नित्य आत्मा में विश्वास-

चार्वाक & बौद्ध को छोड़ कर समस्त भारतीय दर्शन आत्मा में विश्वास करते हैं।

दुःख का कारण भग्न/अविद्या है-

समस्त दर्शन द्वारा स्वीकार्य।

नैतिकता को महत्व-

समस्त I.P. जीवन में नैतिकता के महत्व को प्रतिस्थापित करते हैं। अपवाद - निष्कण्ड चार्वाक।

पुनर्जन्म & पुनर्जन्म में विश्वास-

अपवाद - चार्वाक

भारतीय दर्शन में दर्शन & धर्म में समन्वय देखता है; जैसे जैन दर्शन में १२ धर्म आते हैं।

9. भारतीय दर्शन यह मानता है कि जीवन एक रंग मंच की भाँति है जिस पर प्रत्येक व्यक्ति को अपनी प्रस्तुति देनी है।
10. भारतीय दर्शन जीवन से शान्ति से संबंधित है। यह प्रत्येक भारतीय दर्शन जीवन जीने की एक विशेष पद्धति बताता है जिसके आखिर जीवन व्यतीत किया जा सकता है & अंततः जीवन से दुःखों को दूर किया जा सकता है।
11. भारतीय दर्शन का विकास धैर्य रूप से/समानान्तर रूप से हुआ है, इसी ओर पश्चात्त्य दर्शन का विकास व्यापक हुआ है।
12. भारतीय दर्शन का विकास खंडन-मंडन प्रक्रिया के तहत हुआ है।

भारतीय दर्शन पर आक्षेप-

1. निराशावादी
2. पलायनवादी



आरम्भ के दृष्टिकोण से या सीमित दृष्टिकोण से हम भारतीय दर्शन को निराशावादी कह सकते हैं, क्योंकि यह जीवन में दुःखों को देखता है परंतु अपनी पूर्णता / नरम परिणति में भारतीय दर्शन को निराशावादी कहना ठीक नहीं है। अपनी पूर्णता में यह आशावादी है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति में दुःखों को दूर करने के उपाय बताये गये हैं। (4 मार्च 2020)

विभिन्न भारतीय दर्शनों में प्रायः इस लौकिक जीवन को कम महत्व दिया गया है, जगत में आसक्ति के परित्याग की बात कही गई है। अतः इसमें भारतीय दर्शन के पलायनवादी होने का आरोप लगाया जा सकता है। परंतु इसे पूर्णतः स्वीकार नहीं किया जा सकता, क्योंकि, विभिन्न भारतीय दर्शनों में वर्णित जीवन मुक्ति को अवधारणा इस जगत में

रह कर ही औरों के जीवन को और अधिक आनंदपूर्ण बनाने की बात करता है। अब इस पर चलायनवादी होने का आरोप पूर्णतः सत्य नहीं है।

* जीवन में मुक्ति → सदेह मुक्ति
* मृत्यु के बाद मुक्ति → विदेह मुक्ति
* स्थिति प्रज्ञा → गीता → सुख दुःख से परेह

